

गुरु मध्व रायरिगे नमो नमो  
गुरु मध्व संततिगे नमो नमो  
श्रिपादरजरिगे गुरु व्यासराजरिगे  
गुरु वादिराजरिगे नमो नमो  
राघवेंद्र रायरिगे वैकुंठ दासरिगे  
पुरंदर दासरिगे नमो नमो  
गुरु विजय दासरिगे भागण्ण दासरिगे  
श्री रंग वलिद दासरिगे नमो नमो  
परम वैराग्यशलि तिमण्ण दासरिगे  
हुन्देकार दासरिगे नमो नमो  
गुरु श्रीश विठलन परम भक्तर चरण  
सरसिज युगगळिगे नमो नमो

---

---

सतत गण नाथ सिद्धियनीव कार्यदलि मति प्रेरिसुवळु पार्वति  
दैवियु  
मुकुति पथके मनवीव महा रुद्रदेव भकुतिदायकळु भारती देवि  
युकुत शास्त्रगळल्लि वनज सम्भवनरसि सत्कर्मगळ नडेसि सज्जान  
मतियित्तु  
गति पालिसुव नम्म पवमाननु चित्तदलि आनन्द सुखनीवळु रमा  
भक्त जनरोदेय नम्म पुरन्दर विट्टलनु सतत इवरोळु निन्दी  
नडेसुवनु

---

---

बारो गुरु राघवेंद्र बारय्या बा बा

हिंदुमुंदिल्लेनगे नीने गति  
एंदु नंबीदे निन्न पादव  
बंधनव बिडिसेन्न करपिडि  
नंदकंद मुकुंद बंधो ।अप।

सेवकनेलो नानु धाविसि बंदेनो  
सेवेय नीडो नीनु  
सेवकन सेवेयनु सेविसि  
सेव्य सेवक भाववीयुत  
ठावु गाणिसि पोरेयो धरेयोळु  
पावनात्मक कायुव करुणि ॥१॥

करेदरे बरुवियेंदु सारुवुदु डंगुर  
त्वरितदि बंदोदगो बंदु  
जरियबेडवो बरिदे निम्मय  
विरह ताळदे मनदि कोरगुवे  
हरिय स्मरणेय निरुतदलि ऐन  
हरुषदलि नीनिरुत कोडुतलि ॥२॥

नरहरि प्रियने बा गुरुशेषविठलन  
करुण पात्रने बैग बा  
गुरुवरने परिपोषिसेन्ननु  
मरेयदले तवचरण कोटीय  
लिरिसि चरणांबुजव तौरुत  
त्वरितदलि ओडोडि बा बा ॥३॥

-----  
बंदनो राघवेन्द्र इंदिल्लिगे ।  
कंदन मोरे कैळि जननियु बरुवते ॥ बंदनो ॥

गजवेरि बंद जगदित निंद ।  
अजपित रामन पदाब्ज स्मरिसुतलि ॥ बंदनो ॥

हरिय कुणिसुत बंद नरहरि प्रिय बंद ।  
शरणागतरनु करव पिडिवेनेंदु ॥ बंदनो ॥

प्रह्लाद व्यासं मुनींद्र राघवेन्द्र ।  
निलिसुत मनव मध्वेश विठलनलि ॥ बंदनो ॥  
-----

-----  
राघवेन्द्र गुरु रायर सेविसिरो सौख्यदि जीविसिरो ॥प॥

तुंगातीरदि रघुरामन पूजिसिरो नरसिंघन भजकरो ॥अप॥

श्री सुधींद्र कर सरोज संजात जगदोळगे पुनीत  
दशरथिय दशत्वव ता वहिसि दुर्मतिगळ जयिसि  
ई समीर मत संस्थापकरागि निंदकरनु नीगि  
भूसुररिगे संसेव्य सदाचरणी कंगोळिसुव करुणि ॥१॥

कुंदद वर मंत्रालयदल्लिरुव करेदल्लिगे बरुव  
बृंदावनगत मृत्तिके जलपान मुकुतिगे सौपान

संदरुशनमात्रदलि महाताप बडिदोडिसलाप  
मंदभाग्यरिगे दोरेयदिरुव सेवे शरणर संजीवा ॥२॥

श्रीद विठलन सन्निधान पात्र संस्तुतिसलु मात्र  
मोद पडिसुतिह तानिहपरदल्लि इतगे सरियल्लि  
मेदिनियोळगिन्नरसलु ना काणे पुसियल्लाणे  
पादस्मरणेय माडदवने पापि ना पैळुवे स्तपि ॥३॥

---

---

तुंगा तीरदि नित सुयतिवरन्यारे पैळम्मय्य  
संगीतप्रिय मंगलसुगुणतरंग मुनिकुलोत्तुंग काणम्म ॥  
चेलुव सुमुख फणेयल्लि तिलक नामगळु नोडम्म  
जलमणिय कोरळल्लि तुलसिमालेगळु पैळम्म  
सुललित कमंडलु दंडवने धरिसिहने नोडम्म  
क्षुल्ल हिरण्यकनल्लि जनिसिद प्रह्लादनु तानिल्लिहनम्म ॥१॥  
सुंदर चरणारविंदके भक्तियलिंद नोडम्म  
वंदिसि स्तुतिसुव भूसुरवृंद नोडम्म  
चंददलंकृतियिंद शोभिसुवानंद नोडम्म  
हिंदे व्यासमुनियेदेनिसिद कर्मदिगळ रसघदिंद रहितने ॥२॥  
अभिनव जनार्धन विठलन ध्यानिसुव नोडम्म  
अभिवंदिसिदवरिगे अखिलार्थव सल्लिसुव नोडम्म  
नभमणियंददि विविधदि शोभिसुव नोडम्म  
शुभगुणनिधि राघवेंद्र गुरु अबुजभवांडदि प्रबल काणम्म ॥३॥

---

---

रथवानेरिद राघवेंद्र  
रचने : गौपालदासरु  
राग : पूर्वि  
ताळ : आदि

सतत मार्गदि संतत सेविपरिगे । अति  
हितदलि मनोरथव कोडुवेनेंदु ॥प ॥

रथवानेरिद राघवेंद्र । सद्गुणगळ सांद्र ॥अ.प ॥

चतुर दिक्कु विदिक्कुगळल्लि । चरिपाजनरल्लि  
मितियिल्लदे बंदु ओलैसुतलि । वरवा बेडुतलि  
नुतिसुत परिपरि नतरागिहरिगे  
गतिपेळदे सर्वथा ना बिडेनेंदु ॥१ ॥

अतुळ महिमाना दिनदल्लि ।दितिजावंशदलि  
उत्पत्तियागि उचितदल्लि । उत्तम रीतियल्लि  
अतिशयविरुतिरे पितन भादेगळ  
अतिशयविरुतिरे पितन भादेगे म -  
न्मथ पितनोलिसिद जित करुणदलि ॥२ ॥

प्रथम प्रह्लाद व्यासमुनिये । यतिराघवेंद्र .... गुरुराघवेंद्र  
पतीतरोद्धारिये पावनकारिये ।करमुगिवेनु दोरेये  
क्षितियोळु गौपालविठलन स्मरिसुत ..... विठल ....  
गौपालविठल

प्रति मंत्रालयदोळु अति मेरेव॥३॥

---

पवमान पवमान जगद प्राण  
संकरुषण भव भयारण्य दहन । प ।  
श्रवणवे मोदलाद नवविध भकुतिय  
तवकदिंदलि कोडु कविजनप्रिया । अप ।  
हेम कच्चूट उपवीत धरित मारुत  
कामादिवर्गरहिता व्योमादि सकल व्यावृता निर्भीता  
रामचंद्रन निजदूत याम यामके निनारधिपुदके  
कामिपे एनगिदु नेमिसि प्रतिदिन ई मनसिगे सुखस्तोमव  
तौरुत पामरमतियनु नीमाणिपुदो ॥ १ ॥  
वज्र शरीर गंभीर मुकुटधर दुर्जनवनकुठार  
निर्जरमणि दया पारावारा उदार सज्जनरघपरिहार  
अर्जुनगोलिदंदु ध्वजवानिसि निंदु मूर्जगवरिवंते  
गर्जने माडिदि हेजे हेजेगे निन अब्ज पाददोळि मूर्जगदलि  
भववर्जित नेनिसो ॥ २ ॥  
प्राण अपान व्यान उदान समान आनंद भारति रमण  
नीने शर्वादिगीर्वाणाद्यरिगे जानधनपालिप वरेण्य  
नानु निरुतदलि ऐनेनेसगुवे मानसादि कर्म  
निनगोप्पिसिदेनो प्राणनाथ सिरिविजयविठलन  
काणिसिकोडुवुदु भानुप्रकाश ॥ ३ ॥

---

वेंकटाद्रि निलयन पंकजनाभन तौरव्व लकुमि ॥

वसुदेव देवकि कंदा नम्मशशिमुखियरोडने आनंदा  
पशुगळ कायद गोविंद नम्मबिसजनाभ मुकुंदा ॥

सामजराज वरदा बलुप्रेमदि भकुतर पोरेदा  
आ महा दितिजर तरिदा निस्सीम महामहिमनागि मेरेद नम्म ॥

उरगगिरियलिप्प अंदुमरुतन हेगलेरि बप्प  
शरणरिगोरवित्त तप्पसैरि मोहन विठुल तिम्मप्प नम्मप्पन ॥

-----  
----

शरणु शरणु निनगेंबेनो विठल  
करुणानिधियेंबे कायय्य विठल

शिशुवागि जनिसिद्यो श्रीरामविठल  
शशिधरनुत गोपिकंदने विठल  
असुरे पूतनि कोंद श्रीकृष्णविठल  
कसुमनाभ सिरिवर मुद्दुविठल

अरसि रुक्मिणिगे नी अरसनो विठल  
सरसिज संभव सन्नूत विठल  
निरुत इट्टिगे मेले नित्यो नी विठल  
चरण सेवेयनित्तु कायय्य विठल

कंडे गोपुर वेंकट प्रभु विठल

अंडजवाहन हौदो नी विठल  
पांडुनंदन परिपालने विठल  
पुंडरीकाक्ष श्री पुरंदर विठल

---

नेरेनंबिदे मद हृदय मंटपदोळु  
परिशोभिसुतिरु पांडुरंग

॥प॥

शरणु जनर संसार महा भय  
हरण करुण सिरि पांडुरंग

॥अ.प॥

नेरेदिह बहुजनरोळिदरु मन  
स्थिर विडु निन्नलि पांडुरंग  
परि परि केलसवु निन्न महापूजे  
निरुत एनगे कोडु पांडुरंग

॥१॥

परदेवने निन्ना लीला स्मृतियनु  
निरुत एनगे कोडु पांडुरंग  
पररापेक्षेय बिडिसि निरंतर  
परगति पथ तौरौ पांडुरंग

॥२॥

सुखवागलि बहु दुःखवागलि  
सखनीनागिरु पांडुरंग  
निखिलांतर्गत व्यास विठल तव  
मुख पंकज तौरौ पांडुरंग

॥३॥



-----

-----